# 1. संस्कार और भावना (विष्णु प्रभाकर)

## एकांकीकार का परिचय

श्री विष्णु प्रभाकर का जन्म उत्तर प्रदेश में 21 जून, सन् 1912 में हुआ। आपने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करके स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ समय तक इन्होंने पंजाब सरकार के कृषि विभाग में कार्य किया, पर बाद में ये नौकरी छोड़कर लेखन-कार्य में संलग्न हो गए।

श्री विष्णु प्रभाकर बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार थे। इन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं; जैसे - कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदि पर अपनी लेखनी चलाई। 11अप्रैल, सन् 2009 को इनका देहांत हो गया।

प्रभाकर जी की सभी रचनाओं में मानवतावादी दृष्टिकोण मुखरित हुआ है। इनके एकांकी समस्या-प्रधान तथा मानव-प्रकृति से ओत-प्रोत तथा भावनात्मक गहराई से संबंधित हैं।

### पात्र-परिचय

**माँ** - संक्रांति काल की एक हिंदू नारी
**अतुल** - माँ का छोटा पुत्र
**उमा** - अतुल की पत्नी
**राम सिंह ( नौकर) और मिसरानी** - माँ का बड़ा पुत्र अविनाश और उसकी पत्नी

[स्टेज पर एक मध्य वर्गीय परिवार के घर के आँगन का दृश्य। पूर्व की ओर दो कमरे हैं जिनके द्वार बंद हैं । पश्चिम भाग का द्वार बाहर जाता है। वह भी बंद है, उत्तर भाग में रसोई के आगे बरामदा है। दक्षिण में बड़ा बरामदा है, जिसका एक द्वार बैठक में जाता है, दूसरा बाहर। जो कुछ दिखाई देता है, वह स्वच्छ, सुंदर और उच्च स्थिति का प्रतीक है। बैठक में एक सोफ़े का एक अंश दृश्य में आता है। रसोई के पास स्वच्छता है और अलमारी में उचित सामान व्यवस्थित-रूप से रखा हुआ है। आँगन में एक ओर पलँग पड़ा है। दूसरी ओर दो कुर्सियाँ तथा एक छोटा टेबल, टेबल पर नाश्ते के खाली बरतन हैं। पलँग पर उमा लेटी है। वह युवती और रूपवती है। पर्दा उठते समय वह कोहनी पर भार टिकाये शून्य में ताकती दिखाई देती है।



Scanned with CamScanner

साड़ी अस्त-व्यस्त है। कुंडलाकार **कर्णफूल**[1] केशों में होकर कपोल पर आ गया है। आगे एक खुली पुस्तक है। वह पढ़ते-पढ़ते सोचने लगी है। सहसा धीरे से फुसफुसाती है।]

**उमा** : **(अपने से बातें करती-सी)** जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं, एक समय आता है, वे ही बातें हम चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं।

**(फुसफुसाकर वह फिर पुस्तक देखती है, फिर शून्य में दृष्टि गड़ा देती है। उसकी आँखें गंभीर हैं, उसके मुख पर आने वाली संध्या की रक्तिम आभा सौंदर्य बिखेर रही है। वह इतनी खोई हुई है कि नौकर रसोई के बरामदे से आकर बरतन उठा ले जाता है, पर वह नहीं देखती। उसका सिर उसी तरह खुला रहता है और दिवा की किरण कर्णफूल पर चमकती है। उसी चमक में केशों की स्निग्धता उभर आती है। तभी पश्चिम वाला बाहर का द्वार खुलता है। माँ अंदर आती है। वे वृद्धा हैं, उनका मुख वेदना से पूर्ण है। आँखों में पीड़ा है और शरीर में थकान, उन्होंने साड़ी पर गरम चादर ओढ़ी है। उनकी पग-ध्वनि सुनकर उमा चौंककर उठती और आँचल ठीक करती है। माँ उसी के पास आकर धम्म से बैठ जाती है। बैठती-बैठती कहती है।)**

**माँ** : **(भर्राए स्वर से)** तूने सुना उमा ?

**उमा** : **(अचरज से)** क्या माता जी ?

**माँ** : पिछले महीने अविनाश बहुत बीमार रहा था।

**उमा** : सच ?

**माँ** : हाँ।

**उमा** : उन्होंने तो कुछ नहीं बताया ।

**माँ** : वह क्या बताता । वह क्या वहाँ जाता है ?

**उमा** : फिर भी सुना तो होगा। आपसे किसने कहा ?

---

1. कान का एक आभूषण

Scanned with CamScanner

माँ : मैं कुमार के घर गई थी। वहीं उसकी मिसरानी ने मुझे बताया। कहने लगी – "तुम्हारा बेटा तो बहुत बीमार रहा, मरकर बचा। सुनकर मैं शर्म से गड़ गई। मेरा बेटा बीमार रहे और मुझे पता भी न लगे।" **( आँसू भर आते हैं स्वर लड़खड़ाता है। बचपन में उसे कभी खाँसी भी हो जाती थी, तो मैं कई-कई दिन तक न खाती थी, न सोती थी, वे बहुतेरा समझाते थे, नाराज़ भी हो जाते थे, पर जी नहीं मानता था और अब ·····**

**[ आगे नहीं बोला जाता। फूट-फूटकर रो पड़ती है। उमा करुणा से द्रवित उनको सँभालती है। ]**

उमा : **( सांत्वना से भीगा स्वर )** माता जी, माता जी ! रोओ मत, इसमें आपका क्या अपराध है ?

माँ : **( उसी तरह )** अपराध और किसका है! सब मुझी को दोष देते हैं। मिसरानी कह रही थी, बहू कैसी भी हो, पर अपने प्राण देकर उसने पति को बचा लिया है। अकेली थी, पर किसी के आगे हाथ पसारने नहीं गई। केवल एक-दो बार मिसरानी ने दवा ला दी थी। वरना स्वयं दवा लाती थी, घर का काम करती थी और फिर अविनाश को देखती थी।

उमा : **( टोककर )** पर माता जी, भाई साहब को हुआ क्या था ?

माँ : हैज़ा।

उमा : **( चौंकती है )** ···· हैज़ा ···· आ ·····।

माँ : मरकर बचा है, बेटी। दस दिन बीत गए, पर अभी तक दफ़्तर नहीं जाता।

उमा : कैसा अचरज है, उन्हें पता भी नहीं लगा।

माँ : पता लगा भी हो तो क्या वह बताने वाला है!

उमा : **( चोट खाकर )** पर माता जी, यह तो ·····

माँ : **( विद्रूप से )** मैं जानती हूँ। मेरे ही तो बेटे हैं। माया-ममता किसी को नहीं छू गई है। हर बात में देश, धर्म और कर्त्तव्य की दुहाई



Scanned with CamScanner

देना उन्होंने सीखा है। आखिर इनका बाप भी तो ऐसा ही **निर्मम**[2] था। मुझे याद है जिस समय अतुल छोटा-सा लड़का रहा। बचने की कोई आशा न थी, उस समय वे शांत मन उसको धरती पर लिटाने के लिए सामान हटा रहे थे। (दुनिया ने **दाँतों तले उँगली दबाकर**[3] कहा था - "ऐसा भी क्या बाप जो अपने बेटे के लिए भी नहीं रोता। उसी बाप के ये बेटे हैं। मुझे सदा इन्होंने माया-ममता में फँसी हुई कहकर **कोसा**[4] है। सदा मेरी निंदा की है।)"

**[चोट पर चोट खाकर उमा तिलमिलाती है। उसके भाव पलटते हैं, करुणा पहले खीझ, फिर हलके रोष में बदल जाती है।]**

उमा : लेकिन माता जी ! इसमें सब दोष भाभी का है।

माँ : वह तो है ही, पर बहू .....

उमा : (**बात काटकर**) मैं अच्छी तरह जानती हूँ, वे देखने में बड़ी भोली लगती हैं, परंतु .....

माँ : (**चौंककर**) भोली .....

उमा : (हाँ, बहुत भोली, माता जी ! बहुत प्यारी। जो एक बार देख लेता है, वह फिर उस रूप को नहीं भुला सकता। बार-बार देखने को मन करता है।) (बड़ी-बड़ी काली आँखें, उनमें शैशव की भोली मुसकराहट, अनजान में ही लज्जा से लाल हुए **कपोलों**[5] पर रहने वाली हँसी).....

माँ : (**और भी अचरज से**) पर उमा ! तूने क्या अविनाश की बहू को देखा है ?

उमा : (**सँभल कर**) हाँ, माता जी।

माँ : कब ?

---

2. ममता रहित, कठोर 3. हैरान होकर 4. बुरा-भला कहा 5. गाल

Scanned with CamScanner

उमा : एक दिन जब आप उनसे गुस्सा होकर बहुत दुखी हो रही थीं, तब मैं भाभी के पास गई थी। दोपहर का समय था, आप सो गईं थीं। सच, माता जी! तब उनके रूप को देखकर मैं चौंक उठी थी। बंगाली इतने सुंदर होते हैं। मुझे देखकर वे मुसकराईं, फिर गले में आँचल डालकर प्रणाम किया और जब मैंने अपना परिचय दिया तो गद्‌गद् हो उठीं। मुझे छाती से लगा लिया .....

माँ : **(वही विस्मय का स्वर)** पर तूने मुझे कभी नहीं बताया।

उमा : बताना ही नहीं चाहती थी।

माँ : क्यों ?

उमा : क्योंकि मैं उनसे लड़ने गई थी।

माँ : **(भौंचक[6])** लड़ने गई थी!

उमा : जी हाँ ! मैं उनसे लड़ने गई थी, क्योंकि वे आपके दुख का कारण थीं। वे न होतीं तो बड़े भइया आपसे अलग कैसे होते, यही बात मैंने उनसे भी कह दी थी।

माँ : **(उत्सुकता से)** सच ?

उमा : जी हाँ !

माँ : तब ?

उमा : तब पहले तो वे मेरी बात सुनकर मुसकरा दीं, फिर बोलीं, इसमें मेरा क्या दोष है ? यह तो ..... मुझे तब क्रोध आ रहा था। बात काटकर मैंने कहा, "दोष तुम्हारा नहीं है तो किसका है ?" तुम न चाहतीं तो बड़े भइया माँ को कैसे छोड़ देते? तुम अब भी चाहो, तो सब कुछ ठीक हो सकता है। तुम उन्हें छोड़ सकती हो। तुम ..... तुम ....."

माँ : **(चौंकती है)** उमा, उमा ! यह कहा तुमने ..... ?

उमा : **(भावावेश में)** हाँ मैंने स्पष्ट कहा था। माँ को बेटे से अलग करना पाप है, माँ का हृदय तोड़ना अत्याचार है। उस अत्याचार को दूर करने के लिए प्राण भी देने पड़ें तो कम हैं।

---

6. हैरान



Scanned with CamScanner

माँ : (उत्सुकता से) तो उसने क्या कहा ?

उमा : वह बोली, "बहन मैं मानती हूँ माँ-बेटे के संबंध से बढ़कर और कोई संबंध नहीं है। पति भी वह, जिसके लिए उसने समाज को ही नहीं, वरन अपने हृदय की **साक्षी**[7] दी है, जिसे वह प्यार करती है। उसके कहने पर वह प्राण दे सकती है, परंतु उसको दुखी करके, वह किसी को सुखी करने की कल्पना भी नहीं कर सकती।" करेगी तो वह पापिन है। सोचो, तुम स्वयं पत्नी हो। यद्यपि तुमने मेरी तरह पति का **वरण**[8] नहीं किया है, फिर भी तुम उन्हें प्यार करती हो .....। मुझे यह बात बुरी लगी, मैंने कहा, "सब पत्नियाँ अपने पतियों को प्यार करती हैं, मैं भी करती हूँ, प्राणों से अधिक प्यार करती हूँ।" सुनकर वे घबराई, नहीं, चौंकी भी नहीं, बोली, "सब की बात मैं नहीं जानती। इतना अधिकार मेरा नहीं है, पर मैं जानती हूँ, तुम अपने पति को प्यार करती हो, तभी तो यहाँ आई हो। मैं अतुल को भी जानती हूँ, उनका भाई है वह भी। कई बार मेरे पास आया है।

माँ : (**हठात् चौंककर**) अतुल वहाँ गया है !

उमा : हाँ माता जी, उन्होंने यही कहा था। मुझे भी अचरज हुआ। मैंने पूछा, "वे यहाँ आते हैं ?" तो हँसकर बोली, "डरो नहीं। वे भाई के पास नहीं आते, दफ़्तर के काम से आते हैं। तुम्हारी बातें उन्होंने ही मुझे बताई हैं। मैं जानती हूँ तुम उन्हें प्यार करती हो।" सोचो तो, कोई तुमसे कहे- "तुम अतुल को छोड़ दो, क्योंकि उनकी माँ या उनका परिवार इस विवाह से नाराज हैं, तो क्या तुम ....." मैं आगे न सुन सकी। मैंने चिल्लाकर कहा, "भाभी, बस करो .....", पर उन्होंने बात पूरी करके दम लिया, बोली "तो क्या तुम उन्हें छोड़ दोगी, बोलो ....."

तब मैंने त्रस्त होकर कहा था, "नहीं भाभी ! मैं नहीं छोड़ सकूँगी। चाहूँ तब भी नहीं।" सुनकर वे मुसकराई, कहने लगीं,

7. गवाही 8. चुनाव

Scanned with CamScanner

"अच्छा ! अब छोड़ो इन बातों को। अभी तो आई हो और अभी ले बैठी ये पचड़े। आओ अंदर चलें।" पर माता जी ! मुझे न जाने क्या हो रहा था। मेरा **अंतर्मन**[9] काँपने लगा था ; मैं उन्हें देखती थी तो जैसे मोहिनी-सी छा जाती थी। मैं थी भी और नहीं भी। मोहग्रस्त आदमी होता भी है और नहीं भी होता, पर हुआ यही, मैं वहाँ न ठहर सकी। वह पुकारती ही रह गई।

**माँ** : **(स्वप्न से जागकर)** तो तुम चली आईं?

**उमा** : हाँ।

**माँ** : **(गंभीर वेदना-सा स्वर)** उमा ! पर तुम वहाँ हो तो आई। अतुल भी जाता है, तुम सब जाते हो, तुम तो निर्मम हो और मैं मोह-ममता में फँसी हुई हूँ, उसकी सूरत को तरसती हूँ। कैसी उलटी बात है ?

**उमा** : **(क्षमा का स्वर)** पर माता जी, हम क्या उनसे मिलने गए थे ? हम तो .....

**माँ** : **(बीच में टोककर)** कहते हैं, चेतन से अचेतन अधिक शक्तिशाली है। उसमें अधिक आकर्षण है, इसलिए तुम एक-दूसरे के प्रति खिंचे। चाहे वह प्रेम था, चाहे घृणा थी, पर असल बात रक्त के खिंचाव की थी, वह होकर रही। काश कि ..... **(स्वर डूबता है)** काश कि मैं निर्मम हो सकती, काश कि मैं संस्कारों की **दासता**[10] से मुक्त हो सकती ! हो पाती तो कुल, धर्म और जाति का भूत मुझे तंग न करता और मैं अपने बेटे से न बिछुड़ती। स्वयं उसने मुझसे कहा था, "संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है।"

**उमा** : यह बड़े भइया ने कहा था ?

**माँ** : हाँ, उसी ने कहा था। मैंने उसे बहुत समझाया, अपने प्रेम की दुहाई दी, पर वह सदा यही कहता रहा, "माँ, संतान का पालन

9. मन की भीतरी चेतना 10. गुलामी



Scanned with CamScanner

माँ-बाप का नैतिक कर्त्तव्य है। वे किसी पर एहसान नहीं करते, केवल राष्ट्र का ऋण चुकाते हैं। वे ऋण-मुक्त हों, यही उनका **परितोष**[11] है। इससे अधिक मोह है, इसीलिए पाप है।" पर मैं क्या करूँ ? मैं जो इससे अधिक है, उसी को पाने के लिए आतुर हूँ। मैं ही क्यों सभी माता-पिता यही चाहते हैं। तभी मैं समझती हूँ, उस डाकिन ने मेरे बेटे को मुझसे छीना है, पर वास्तव में दोष उसका नहीं है।

उमा : माता जी ! लगता तो मुझे भी ऐसा ही है ।

**[ अतुल का प्रवेश। स्वस्थ युवक, साँवला रंग, मुख पर दृढ़ता और आँखों में सौम्यता। उसे देखकर उमा उठती है । क्षण भर उसे देखती है। वह सदा की तरह शांत है। फिर रसोई की ओर चली जाती है। अतुल सीधे आकर कुर्सी पर बैठ जाता है और माँ को देखकर कहता है। ]**

अतुल : क्या बन रहा है। माता जी !

माँ : **( अनसुना करके )** तूने सुना ?

अतुल : क्या ?

माँ : अविनाश बहुत बीमार था। **( स्वर भीग जाता है। )**

अतुल : **( जूता खोलते-खोलते )** हाँ, उन्हें हैज़ा हो गया था।

माँ : **( अचरज से )** तू जानता था!

अतुल : हाँ।

माँ : तूने मुझसे कहा तक नहीं।

अतुल : तुमसे कहता, क्यों ?

माँ : क्यों, क्या मैं उसकी माँ नहीं थी ?

अतुल : **( मुसकराता है )** माँ तो हो, पर सुनकर क्या करतीं ? क्या उसके पास जातीं ?

**[ माँ सहसा जवाब नहीं देती। अतुल फिर कहता है। ]**

11. इच्छापूर्ति से होने वाली प्रसन्नता



Scanned with CamScanner

अतुल : मैं जानता था, तुम वहाँ नहीं जा सकोगी और जाने से भी क्या होता है। जब तक तुम उस नीची श्रेणी की **विजातीय**[12] भाभी को घर नहीं ला सकतीं, तब तक प्रेम और ममता की दुहाई व्यर्थ है। तुम सब निर्मम हो, निर्मम .....

माँ : **(बीच में रोककर)** मैं निर्मम हूँ ?

अतुल : निर्मम ही नहीं कायर भी। जिन संस्कारों में तुम पली हो, उन्हें तोड़ने की शक्ति तुम में नहीं है, माँ !

**[उमा फिर प्रवेश करती है, उसके हाथ में चाय की ट्रे है जिसे वह कमरे में ले जा रही है, पर बात सुनकर रुकती है। कहती है।]**

उमा : लेकिन आप में तो है, आप तो वहाँ गए होंगे ?

अतुल : मुझे वहाँ जाने के लिए कोई काम नहीं था, इसलिए नहीं गया।

उमा, माँ (एक साथ) : आप भी नहीं गए ? (प्याले झनझनाते हैं।)

माँ : हैं, तू भी नहीं गया !

अतुल : जाकर क्या करता ?

उमा : **(विद्रूप[13] से)** भाई के मरने का समाचार सुनकर भी आपका हृदय नहीं पसीजता ?

अतुल : **(शांत स्वर)** उमा, यदि तुम भाई साहब को जानती होतीं, तो ऐसी बात नहीं कहतीं। मुझे तो क्या, वे मेरे डॉक्टर को भी अपने पास नहीं आने देते।

उमा : लेकिन फिर भी आप उनके भाई थे। आपको देखकर उन्हें शांति मिलती । वे .....

अतुल : **(उठता है और नौकर को पुकारता है।)** रामसिंह, पानी ले आओ।

**[शीघ्रता से कोई चलता है। आवाज़ आती है।]**

---

12. दूसरी जाति की 13. मज़ाक, उपहास



Scanned with CamScanner

आवाज़ : लाया सरकार।

अतुल : (उमा की ओर मुड़कर) देखो उमा, भाभी से बढ़कर भइया का और कोई नहीं है, यह कटु सत्य हमें स्वीकार करना ही चाहिए। इसलिए उनके होते हमें कुछ भी करने का अधिकार न ही था और न है।

[उमा त्रस्त होकर चली जाती है। माँ भी उठती है। नौकर पानी ले आया है। अतुल हाथ-मुँह धोने लगता है। कई क्षण केवल पानी गिरने का शब्द होता रहता है, फिर बाहर का द्वार खुलता है। मिसरानी प्रवेश करती है। प्रौढ़ा है और एक फटी हुई ऊनी चादर ओढ़े है। सिमटी-सी अतुल को देखती हुई अंदर चली जाती है। अतुल उसे देखकर भी नहीं देखता। फिर अंदर से बातें करने का स्वर उठता है। शीघ्र ही वह तीव्र हो जाता है। सूर्य की किरणें धीरे-धीरे विदा लेती हैं। संध्या विश्व के रंगमंच पर प्रवेश करती है, थके विश्व को सहलाने के लिए। तभी माँ कमरे से बाहर आती हैं। वे अब और भी उद्विग्न[14] हैं। उनके पैर-डगमगाते हैं। वाणी रुँध जाती है।]

माँ : अतुल ! तूने और भी सुना !

अतुल : क्या माँ !

माँ : अब अविनाश अच्छा हुआ, तो उसकी बहू बीमार पड़ गई। कहते हैं उसके बचने की कोई आशा नहीं है।

अतुल : हाँ, सुना तो है।

(उमा का प्रवेश)

उमा : क्या सुना है ?

अतुल : यही कि भाभी मरणासन्न[15] है।

उमा : (चकित) क्या ?

माँ : तो तुझे यह भी पता है!

---

14. परेशान, 15. जिसकी मृत्यु निकट हो।



Scanned with CamScanner

अतुल : हाँ माता जी! मुझे पता है और यह भी पता है कि अपने प्राण खपाकर भाभी ने भइया को तो बचा लिया था, परंतु भइया के पास भाभी को बचाने के लिए प्राण नहीं हैं।

माँ : **(अनसुना करके)** अतुल, तो अविनाश की बहू मर जाएगी !

अतुल : सुना तो ऐसा ही है ।

**[उमा अचरज से माँ को देखती है, फिर पति को]**

उमा : आप क्या कह रहे हैं ? आप वहाँ नहीं गए ? नहीं, नहीं आप वहाँ जाइए।

अतुल : **(उसी तरह शांत)** कोई लाभ नहीं होगा, उमा ! भइया में एक दोष है– वे जो कहते हैं, करना जानते हैं। उनके पास पैसा नहीं है, परंतु उसके लिए वे किसी के आगे हाथ नहीं पसारेंगे। वे फ़ौलाद के समान हैं, जो टूट जाता है, पर झुकता नहीं।

उमा : **(काँपकर)** लेकिन भाभी को कुछ हो गया ····· तो ?

अतुल : **(गंभीर)** भाभी को कुछ हो गया तो ····· तो क्या होगा ? **(सहसा काँपकर)** नहीं उमा इससे आगे सोचने का अधिकार मुझे नहीं है। **(सहसा माँ आगे बढ़ जाती है।)**

माँ : लेकिन मुझे तो है।

अतुल : **(उसी तरह)** अधिकार तो तुम्हें भी नहीं है माँ। पर तुम सोचो तो तुम्हें कोई रोक भी नहीं सकता।

माँ : **(उद्विग्न)** तो मैं सोचती हूँ, अविनाश की बहू को कुछ हो गया तो ····· शायद अविनाश भी ·····।

**[आगे शब्द नहीं निकलते। वाणी फूट पड़ती है। उमा अवाक्[16] उन्हें देखती है।]**

उमा : **(चकित, दुखित)** माता जी, माता जी !

माँ : हाँ बेटी, मैं उसे जानती हूँ, वह नहीं बचेगा, नहीं बचेगा।

उमा : **(कंपित स्वर)** माता जी आप क्या कह रही हैं ?

अतुल : **(गंभीर)** माँ तुम इतना जानती हो ?

16. चकित



Scanned with CamScanner

माँ : हाँ उमा, अतुल ! मैं ठीक कह रही हूँ , वह नहीं बचेगा। उसे बचाने की शक्ति केवल मुझी में है, केवल मुझी में .....

**( फिर अचरज )**

उमा अतुल ( एक साथ ) : माँ .....

माँ : **( उसी तरह )** अतुल ! इसीलिए मैं कहती हूँ, तू एक बार मुझे उनके पास ले चल। वह निर्मम है, पर मैं माँ हूँ। मुझे निर्मम नहीं होना चाहिए। मैं उसके पास चलूँगी।

**[ उमा हर्ष से काँप उठती है। अतुल उसी तरह गंभीर है।]**

उमा : माँ, तुम कितनी अच्छी हो !

अतुल : **( गंभीर )** अभी चलो माँ, पर चलने से परले एक बात सोच लो। यदि तुम उस नीच कुल की विजातीय भाभी को इस घर में नहीं ला सकीं तो जाने से कुछ लाभ नहीं होगा।

माँ : **( अपेक्षाकृत शांत )** जानती हूँ अतुल। इसीलिए तो जा रही हूँ।

अतुल : **( हर्षित होकर )** ऐसी बात है तो चलो माँ, अभी चलो। **( पुकारकर )** राम सिंह ! ताँगा लाओ, अभी इसी वक्त। और उमा ! तुम भी चलो, शीघ्र उमा .....

**[ कहता हुआ वह बड़े कमरे से होकर बाहर जाता है। उसकी आँख भर आई है। माँ और उमा कई क्षण तक शून्य में ताकती रहती हैं। वातावरण में शांति और स्निग्धता है। सहसा उमा को पुस्तक के वाक्य याद आते हैं। वह फुसफुसाती है।]**

उमा : जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं एक समय आता है, जब चाहे किसी कारण से भी हो, हम उन्हीं बातों को स्वीकार कर लेते हैं।

**[ उसका मुख प्रकाश से मुखरित हो उठता है। नौकर ने पीछे से स्विच दबा दिया है। यहीं पर पर्दा गिर जाता है।]**

Scanned with CamScanner

# 2. बहू की विदा (विनोद रस्तोगी)

## एकांकीकार का परिचय

विनोद रस्तोगी का जन्म सन् 1923 में उत्तर प्रदेश के फ़र्रूखाबाद ज़िले के शमसाबाद नामक गाँव में हुआ। आपकी आरंभिक शिक्षा फ़र्रूखाबाद में तथा स्नातक स्तर की शिक्षा कानपुर में हुई। हिंदी विषय में एम. ए. के बाद रस्तोगी जी आकाशवाणी के इलाहाबाद केंद्र में नाट्य निर्देशक के पद पर कार्य करने लगे। आपने नाट्य-साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। अब तक आपके आठ उपन्यास तथा दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी अनेक रचनाएँ पुरस्कृत की जा चुकी हैं। 'नए हाथ', 'आज़ादी के बाद', 'बर्फ़ की मीनार', 'गोपा का दान', 'दरारें', 'रुपया', 'रूप और रोटी', 'भगीरथ के बेटे' - आपकी बहुचर्चित रचनाएँ हैं। आपकी रचनाओं में जीवन की समस्याओं का चित्रण हुआ है। आधुनिक जीवन की मानसिक कुंठाओं को उन्होंने अपने एकांकियों में स्थान दिया है।

### पात्र-परिचय

| | | |
|---|---|---|
| **जीवनलाल** | - | एक धनी व्यापारी, अवस्था पचास वर्ष |
| **राजेश्वरी** | - | जीवनलाल की पत्नी, अवस्था छियालीस वर्ष |
| **रमेश** | - | जीवनलाल का पुत्र, अवस्था बाईस वर्ष |
| **कमला** | - | रमेश की पत्नी अवस्था उन्नीस वर्ष |
| **प्रमोद** | - | कमला का भाई, अवस्था तेईस वर्ष |

**[ कमरा आधुनिक ढंग से सजा है। सामने की ओर बाएँ कोने में रेडियो और दाएँ कोने में पुस्तकों का रैक है। कमरे के बीच में सोफ़ा-सेट है। छोटी गोल मेज़ पर सुंदर फूलदान रखा है।**

**कमरे में दो द्वार हैं। सामनेवाला द्वार अंदर जाने के लिए है और बाईं ओर का द्वार बाहरी बरामदे में खुलता है। दोनों पर पर्दे पड़े हैं। दाईं ओर खिड़की है जो खुली हुई है।**



Scanned with CamScanner

पर्दा उठने पर जीवनलाल खिड़की के समीप खड़े हुए दिखाई पड़ते हैं। वे बाहर की ओर देख रहे हैं। आँखों पर चश्मा है। भरे हुए चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। सिर गंजा है। धोती-कुर्ता पहने हैं। मुख पर गंभीरता और समृद्धि के चिह्न हैं।

उनसे कुछ दूर हटकर ही प्रमोद विनम्र भाव से खड़ा है। वह पैंट और बुश्शर्ट पहने है। चेहरे पर निराशाजन्य करुण भाव है।]

प्रमोद : **(आगे बढ़कर धीमे स्वर में)** क्या निर्णय किया आपने ?

जीवनलाल : विदा नहीं होगी।

प्रमोद : लेकिन ज़रा सोचिए तो। यदि आपने विदा नहीं की तो बहन की क्या दशा होगी।

जीवनलाल : मैंने उसकी दशा का ठेका नहीं लिया।

प्रमोद : हर लड़की पहला सावन अपनी सखी-सहेलियों के साथ हँस-खेलकर बिताने का सपना देखती है।

जीवनलाल : जानता हूँ।

**[जीवनलाल सोफ़े पर बैठकर जमुहाई लेते हैं, मानो प्रमोद की बातों से ऊब रहे हों।]**

प्रमोद : यह जानकर भी ···

जीवनलाल : अपना निर्णय सुना चुका हूँ। विदा नहीं होगी।

प्रमोद : यदि मैं कमला को बिना लिए ही गया तो माँ का हृदय टूट जाएगा।

जीवनलाल : मैं मजबूर हूँ। अगर माँ-बहन का इतना ही ख्याल था तो दहेज़ पूरा क्यों नहीं दिया ?

प्रमोद : **(दीन स्वर में)** अपनी **सामर्थ्य**[1] के अनुसार जितना भी हो सका हमने दे दिया। फिर भी अगर···

जीवनलाल : **(कड़े स्वर में)** अगर तुम्हारी सामर्थ्य कम थी तो अपनी बराबरी का घर देखते। झोंपड़ी में रहकर महल से नाता क्यों जोड़ा ?

1. क्षमता, योग्यता



Scanned with CamScanner

प्रमोद : **( हाथ जोड़कर )** जी···

जीवनलाल : **( उठकर आवेश से टहलते हुए )** देना तो दूर, बारात की खातिर भी ठीक से नहीं की गई। मेरे नाम पर जो धब्बा लगा, मेरी शान को जो ठेस पहुँची, भरी बिरादरी में जो हँसी हुई, उस करारी चोट का घाव आज भी हरा है। जाओ, कह देना अपनी माँ से कि अगर बेटी की विदा कराना चाहती हैं तो पहले उस घाव के लिए मरहम भेजें।

प्रमोद : जी ··· आप इस समय तो विदा कर दें। हम गौने में आपकी हर माँग पूरी करने की चेष्टा करेंगे।

जीवनलाल : मैंने दुनिया देखी है, प्रमोद ! ये बाल धूप में सफ़ेद नहीं हुए हैं। और तुम ··· **( उत्तेजित[2] स्वर में )** कल के छोकरे मुझे बेवकूफ़ बनाना चाहते हो!

प्रमोद : यह आप क्या कह रहे हैं ?

जीवनलाल : ठीक कह रहा हूँ। मेरा फ़ैसला आखिरी है। विदा तभी होगी जब पाँच हज़ार नकद **( दायाँ हाथ फैलाकर )** इस हाथ पर रख दोगे।

प्रमोद : **( आवेश में )** यह तो सरासर[3] अन्याय है। शिकायत आपको हमसे हैं। उस भोली-भाली लड़की ने आपका क्या बिगाड़ा है जो विदा न करके आप उससे बदला ले रहे हैं ? अगर रमेश बाबू होते ···

जीवनलाल : तो वह क्या कर लेता ? मेरे सामने मुँह खोलने की हिम्मत नहीं है उसमें। वह मेरा बेटा है। तुम्हारी तरह बड़ों के मुँह लगने की बदतमीज़ी करने वाला कोई आवारा छोकरा नहीं।

प्रमोद : **( अपमान से तिलमिलाकर )** बाबूजी ! बेटीवाला समझकर ही आप मेरा अपमान कर रहे हैं। किंतु ··· किंतु यह न भूलिए कि आप भी बेटीवाले हैं।

---

2. भड़काया हुआ 3. पूरी तरह से



Scanned with CamScanner

जीवनलाल : हाँ, हम भी बेटीवाले हैं! लेकिन तुम्हारी तरह नहीं। पिछले महीने हमने भी अपनी गौरी की शादी की है। वह खातिरदारी की कि बारात वाले **दंग रह गए।** इतना दहेज़ दिया कि देखने वालों ने दाँतों तले अँगुली दबा ली। (दर्द मिश्रित आवेश) तुम मेरी बराबरी करोगे ? हुँ ··· बेटीवाले ··· ! बेटीवाले होकर भी हमारी मूँछ ऊँची है ! समझे ?

प्रमोद : जी ···

जीवनलाल : रमेश गया है गौरी को विदा कराने। (कलाई पर बँधी घड़ी देखकर) कुछ देर में उसे लेकर आता ही होगा। मेरी बेटी पहला सावन यहाँ बिताएगी। तुम्हारी बहन के सपने कभी पूरे नहीं होंगे और उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा ! समझे ?

प्रमोद : **(व्यंग्य से)** जो हमारी बहन है क्या वह आपकी कोई नहीं है ?

जीवनलाल : **(तेज़ी से)** बेटी और बहू को एक ही तराज़ू पर तौलना चाहते हो ? बेटी बेटी है और बहू बहू!

प्रमोद : ठीक है। जब आप अपनी ज़िद पर अड़े हैं तो विनती करना व्यर्थ है (रुककर धीमे स्वर में) क्या जाने से पहले एक बार बहन से मिल सकता हूँ ?

जीवनलाल : ज़रूर! और हाँ, उसे यह भी बताते जाना कि अगली बार मेरे लिए मरहम लेकर विदा कराने कब आओगे! (ऊँचे स्वर में) अरे, सुनती हो, गौरी की माँ! ज़रा बहू को भेज दो। अपने भाई से मिल ले आकर। (सहज स्वर में) मैं तब तक देखूँ कि माली के बच्चे ने झूला डाला या नहीं! (द्वार की ओर बढ़ते हैं। द्वार का पर्दा हटाकर मुड़ते हुए) गौरी के लिए झूला डलवा रहा हूँ लॉन में।

[जीवनलाल का प्रस्थान। प्रमोद थका-सा सोफ़े पर बैठ जाता है। अंदर से कमला आती है। चाँद-से सुंदर मुखड़े पर उदासी की घटा है। हाथों में लाल चूड़ियाँ हैं। रेशमी साड़ी ब्लाउज पहने है। प्रमोद के पास जाकर चुपचाप खड़ी हो जाती है- सिर नीचा किए।]

प्रमोद : (भारी स्वर में) बैठ जाओ, कमला।

**[कमला पास ही बैठ जाती है।]**

प्रमोद : अच्छी तरह तो हो ?

**[कमला सिसकने लगती है।]**

प्रमोद : **(आर्द्र[5] स्वर में)** पागल मत बनो, कमला! रोओ मत, मैं कहता हूँ रोओ मत! इन मोतियों का मूल्य समझने वाला यहाँ कोई नहीं है। पानी से पत्थर नहीं पिघल सकता!

कमला : **(सिसकती हुई)** भैया! क्या···

प्रमोद : घबराओ मत! मैं जल्दी ही फिर आऊँगा और उस बार विदा अवश्य होगी, क्योंकि मैं चोट का मरहम लेकर आऊँगा।

कमला : **(न समझने के ढंग से)** मरहम ··· ?

प्रमोद : हाँ, कमला! हमारे व्यवहार से बाबू जी के कलेजे में घाव हो गया है। उन्हें मरहम चाहिए और उस मरहम की कीमत है पाँच हज़ार रुपये !

**[कमला चौंककर भाई की ओर देखती है।]**

प्रमोद : तुम चिंता न करो, कमला! मरहम का प्रबंध हो जाएगा। इस गिरे हाल में भी मकान सात-आठ हज़ार में तो बिक ही जाएगा।

कमला : **(व्याकुलतापूर्ण आग्रह से)** मेरी विदा के लिए घर न बेचना, भैया! आपको मेरे सुख-सुहाग की सौगंध है।

प्रमोद : यह क्या कह रही हो तुम ? क्या तुम नहीं चाहतीं कि पहला सावन सखी-सहेलियों के साथ माँ के घर बिताओ ?

---

5. द्रवित, नम



Scanned with CamScanner

कमला : किस लड़की की यह कामना नहीं होगी, भैया ? लेकिन ... लेकिन उस कामना की पूर्ति के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकाना कहाँ तक ठीक है? साल-दो साल में विमला का ब्याह भी आपको करना है। आवेश में आकर...

प्रमोद : **( बीच में ही )** लेकिन तुम ...

कमला : मेरी चिंता आप न करें। सच, विदा न होने से मुझे ज़रा भी दुख न होगा।

प्रमोद : कमला ...!

कमला : गौरी आ रही है। बहुत अच्छा स्वभाव है उसका। हर समय हँसती-हँसाती ही रहती है। उसके साथ रहकर मुझे सखी-सहेलियों की कमी बिलकुल नहीं अखरेगी। आप विश्वास करें, भैया।

प्रमोद : लेकिन आज नहीं तो कल रुपया तो देना ही पड़ेगा, कमला! कागज़ के टुकड़ों पर अपना स्नेह और प्यार बेचनेवालों के बीच तुम इस तरह कब तक रह सकोगी ?

कमला : धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा, भैया। माँ जी तो ममता की मूर्ति हैं ही, बाबू जी ज़रा जिद्दी स्वभाव के हैं। समय के साथ वे भी सब भूल जाएँगे।

प्रमोद : मुझे तो ऐसा नहीं लगता। सब एक ही धातु के बने हैं। हो सकता है, माँजी की ममता सिर्फ़ दिखावा हो!

**[ अंदर से राजेश्वरी का प्रवेश। गोरा रंग, स्वस्थ शरीर। सफ़ेद साड़ी और ब्लाउज पहने है। ]**

राजेश्वरी : कैसा दिखावा, भैया ?

**[ प्रमोद चौंक पड़ता है। कमला और प्रमोद उठने का उपक्रम करते हैं। ]**

राजेश्वरी : **( दूसरे कौच पर बैठती हुई )** बैठे रहो तुम लोग। ( हँसकर ) क्या बातें हो रही थीं भाई-बहन में ?

प्रमोद : बस, कुशल-क्षेम[6] पूछ रहा था।

6. कुशल-मंगल



Scanned with CamScanner

राजेश्वरी : हाँ, विदा के लिए क्या कहा उन्होंने ?

**[ प्रमोद मौन रहता है। कमला दृष्टि नीची कर लेती है। ]**

राजेश्वरी : समझ गई, अपनी ज़िद के आगे तो वे किसी की सुनते ही नहीं। जब तुम्हारी चिट्ठी आई थी तभी मना कर रहे थे। मैं तो समझाते-समझाते हार गई। क्या कहा उन्होंने ?

**[ प्रमोद अब भी मौन है। ]**

राजेश्वरी : मुझसे शर्म कैसी ? मेरे लिए जैसे रमेश वैसे ही तुम। बोलो, कितना रुपया चाहते हैं वे ?

प्रमोद : जी··· जी, रुपये की तो कोई बात नहीं हुई। वे तो ···

राजेश्वरी : **( बीच में ही )** माँ से झूठ बोलते हो! मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूँ। इंसान से ज़्यादा प्यारा उन्हें पैसा है।

प्रमोद : जी ··· आप ···

राजेश्वरी : **( प्रमोद की ओर गूढ़[7] दृष्टि से देखती हुई )** बोलो, कितना रुपया लेकर वे विदा करने को तैयार हैं ? चुप क्यों हो? बताओ।

प्रमोद : **( धीमे और उदास स्वर में )** पाँच हज़ार।

राजेश्वरी : बस! मैं देती हूँ तुम्हें रुपये। उनके मुँह पर मारकर कहना कि यह लो कागज़ के रंग-बिरंगे टुकड़े जिन्हें तुम आदमी से ज़्यादा प्यार करते हो। **( उठकर सामनेवाले द्वार की ओर बढ़ती हुई )** मैं अभी लाती हूँ।

प्रमोद : **( उठकर )** ठहरिये, माँ जी।

**[ राजेश्वरी रुक जाती है और मुड़कर प्रमोद की ओर देखती है। ]**

प्रमोद : मुझे रुपये नहीं चाहिए। मैं बिना विदा कराये ही जा रहा हूँ।

[कमला उसी प्रकार मूर्तिवत् बैठी है।]

---

7. गहरी



Scanned with CamScanner

**राजेश्वरी** : **( लौटती हुई )** यह क्या कह रहे हो, बेटा ? मेरे रहते विदा न हो यह कभी नहीं हो सकता। मैं माँ हूँ, माँ के दिल को समझती हूँ। **( भारी स्वर में )** जिस तरह उतावली होकर मैं गौरी की राह देख रही हूँ उसी तरह तुम्हारी माँ भी कमला की राह देख रही होगी। नहीं, विदा ज़रूर होगी। तुम अकेले नहीं जाओगे। **( कमर से कुंजियों[8] का गुच्छा निकालकर कमला की ओर बढ़ाती हुई )** जा बेटी, तिजोरी से रुपये निकाल ला।

**[ कमला गुच्छा लेने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाती। प्रमोद खिड़की की ओर मंद गति से बढ़ता है। ]**

**राजेश्वरी** : जाती क्यों नहीं ? **( गुच्छा कमला के हाथ में थमाती हुई )** जल्दी कर।

**[ कमला उठकर 'माँ जी' कहती है और फिर सिसकने लगती है। राजेश्वरी 'मेरी बेटी' कहकर उसे हृदय से लगा लेती है। प्रमोद खिड़की से बाहर की ओर देखने लगता है। ]**

**जीवनलाल** : **( बाहर से )** अरे, सुनती हो! गौरी के आने का समय हो गया और तुमने स्वागत की कोई तैयारी नहीं की !

**राजेश्वरी** : **( कमला से )** जा, बेटी! तू अंदर जा!

**[ कमला अंदर जाती है। प्रमोद मुड़कर बाहर वाले द्वार की ओर देखता है, जिधर से जीवनलाल आते हैं। ]**

**जीवनलाल** : अरे, तुम यहाँ खड़ी हो ? जाकर तैयारी करो स्वागत की। ज़रा यह भी तो देख लें कि नाकवाले अपनी बेटी का स्वागत कैसे करते हैं।

**राजेश्वरी** : **( चिढ़कर )** गालियों के अलावा कभी सीधी बात नहीं निकलती मुँह से ? जब देखो तब बेढंगी बातें !

**जीवनलाल** : यह लो! इसमें कौन-सी गाली दे दी मैंने ?

---

8. कुंजियाँ

Scanned with CamScanner

राजेश्वरी : तुम समझते हो कि दुनिया में एक तुम्हीं नाकवाले हो, और सब नकटे हैं !

जीवनलाल : तुम्हें तो मेरी हर बात में बुराई ही दिखाई देती है। प्रमोद, तुम्हीं बताओ, मैंने कोई बुरी बात कही है ?

प्रमोद : **( धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ )** ठीक ही कहा है आपने। आज के युग में पैसा ही नाक और मूँछ है। जिसके पास पैसा नहीं वह नाक-मूँछ होते हुए भी नकटा है, मूँछकटा है।

**[ नेपथ्य से हॉर्न का स्वर। ]**

राजेश्वरी : **( प्रसन्न स्वर में )** आ गई मेरी गौरी ! **( राजेश्वरी से )** अरे, खड़ी-खड़ी मेरा मुँह क्या देख रही हो ? अंदर से मिठाई का थाल लाओ। **[ राजेश्वरी उसी प्रकार खड़ी रहती है। उसकी दृष्टि बाहर वाले द्वार की ओर हैं। प्रमोद भी उसी ओर देख रहा है। अंदर वाले द्वार के पर्दे की ओट में कमला खड़ी हैं। बाहर से उसका हाथ दिखाई पड़ रहा है। जीवनलाल बड़े उत्साह से द्वार की ओर बढ़ते हैं। तभी बाहर से रमेश आता है। इकहरे बदन का सुंदर नवयुवक है वह। पैंट और कमीज़ पहने है। हाथ में बरसाती कोट है। चेहरे पर उदासी के चिह्न हैं। बरसाती कोट कोच पर रखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है। ]**

जीवनलाल : **( बाहर वाले द्वार का पर्दा हटाकर बाहर झाँकने के बाद घबराये हुए स्वर में )** गौरी कहाँ है ?

रमेश : **( धीमे स्वर में )** वह नहीं आई।

जीवनलाल : नहीं आई ? क्यों ? तबीयत तो ठीक है उसकी ?

रमेश : जी हाँ !

जीवनलाल : फिर ?

रमेश : उन्होंने विदा नहीं की!

[ राजेश्वरी **हतप्रभ**[9]-सी कोच पर बैठ जाती है। कमला के

9. निस्तेज, शिथिल



Scanned with CamScanner

हाथ में कंपन होता है जिससे पर्दा भी हिल जाता है। प्रमोद बड़े ध्यान से जीवनलाल की ओर देख रहा है।]

जीवनलाल : **(जैसे किसी ने छाती पर घूँसा मार दिया हो)** विदा नहीं की ? क्यों नहीं की विदा ?

रमेश : कह रहे थे दहेज़ पूरा नहीं दिया गया।

जीवनलाल : **(बिगड़कर)** हमने तो जीवनभर की कमाई दे दी और उनकी नज़र में दहेज़ पूरा नहीं दिया गया। लोभी कहीं के !

राजेश्वरी : **(उठकर)** उन्हें क्यों भला-बुरा कह रहे हो ? बेटीवाले चाहे अपना घर-द्वार बेचकर दे दें पर बेटेवालों की नाक-भौं सिकुड़ी ही रहती है।

जीवनलाल : मगर शराफ़त और इंसानियत .....

राजेश्वरी : **(बीच में ही)** अब शराफ़त और इंसानियत की दुहाई देते हो। कुछ देर पहले तो .....

जीवनलाल : चुप रहो तुम !

राजेश्वरी : बहुत चुप रही। अब नहीं रहूँगी। आखिर क्या कमी है बहू के दहेज़ में? मगर तुम हो कि

जीवनलाल : **(अनसुनी करके)** मेरी बेटी की विदा न करके उन्होंने मेरा अपमान किया है। मैं ..... मैं .....

राजेश्वरी : तुम भी तो किसी की बेटी की विदा न करके अपमान कर रहे हो किसी का।

जीवनलाल : **(चीखकर)** गौरी की माँ!

राजेश्वरी : अब भी आँखें नहीं खुलीं ? जो व्यवहार अपनी बेटी के लिए तुम दूसरों से चाहते हो वही दूसरे की बेटी को भी दो। जब तक बहू और बेटी को एक-सा नहीं समझोगे, न तुम्हें सुख मिलेगा और न शांति !

**[जीवनलाल बेचैनी से इधर-उधर टहलते हैं। वे हाथ मल रहे हैं। सिर नीचे झुका है। प्रमोद रमेश के पास जाकर खड़ा हो जाता है।]**

Scanned with CamScanner

**जीवनलाल** : बहू और बेटी! बेटी और बहू !! अजीब उलझन है। कुछ समझ में नहीं आता।

**राजेश्वरी** : अगर हर बेटेवाला यह याद रखे कि वह बेटीवाला भी है तो सब उलझनें सुलझ जाएँ।

**जीवनलाल** : **(रुककर पत्नी की ओर देखते हुए)** .... शायद तुम ठीक कहती हो।

**प्रमोद** : **(आगे बढ़कर धीमें स्वर में)** अब मुझे आज्ञा दीजिए, बाबू जी !

**जीवनलाल** : **(चौंककर)** ऐं .....

**प्रमोद** : मेरी गाड़ी का समय हो रहा हैं। मैं जा रहा हूँ। **(द्वार तक जाता है फिर घूमकर)** मैं जल्द ही फिर आऊँगा। विश्वास रखें, इस बार आपकी चोट के लिए मरहम लाना न भूलूँगा।

**जीवनलाल** : **(दुखी स्वर में)** ठहरो, प्रमोद! मुझे और लज्जित न करो, मेरी चोट का इलाज बेटी की ससुरालवालों ने दूसरी चोट से कर दिया है।

**प्रमोद** : **(लौटता हुआ साश्चर्य)** बाबू जी ..... !

**जीवनलाल** : **(निःश्वास छोड़कर)** कभी-कभी चोट भी मरहम का काम कर जाती है, बेटा। **(राजेश्वरी की ओर मुड़कर)** अरे, खड़ी-खड़ी हमारा मुँह क्या ताक रही हो ? अंदर जाकर तैयारी क्यों नहीं करतीं? बहू की विदा नहीं करनी है क्या ?

[कमला का हाथ पर्दे की ओट में हो जाता है। वह हर्ष के आँसू पोंछती हुई शीघ्रता से अंदर जाती है। रमेश और प्रमोद मुसकराकर एक-दूसरे की ओर देखते हैं। जीवनलाल मंद गति से खिड़की की ओर बढ़ते हैं और तभी धीरे-धीरे **यवनिका**[10] पात होता है।]

---

10. रंगमंच का परदा

Scanned with CamScanner

# 3. मातृभूमि का मान (हरिकृष्ण 'प्रेमी')

## एकांकीकार का परिचय

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' का जन्म मध्य प्रदेश के गुना शहर में सन् 1908 में हुआ। इन्होंने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत एक पत्रकार के रूप में की। प्रेमी जी एक लोकप्रिय और सफल नाटककार हैं। आप के प्रसिद्ध नाटक हैं- 'बंधन', 'छाया', 'ममता', 'पाताल विजय', 'रक्षा बंधन', 'शिवासाधना', 'प्रतिशोध', 'आहुति', 'विषपान' आदि। प्रेमी जी के एकांकियों में - 'बेड़ियाँ', 'बादलों के पार', 'आगे मंदिर', 'नया समाज', 'मातृभूमि का मान', 'निष्ठुर न्याय' आदि। इनके नाटक सामाजिक, ऐतिहासिक तथा पौराणिक हैं।

इन्होंने अपनी रचनाओं में मानवीय प्रेम, देशभक्ति, राष्ट्रीयता, वीरता, साहस, पराक्रम जैसे मानवीय मूल्यों को स्थान दिया है। सन् 1974 में इनका निधन हो गया।

## पात्र-परिचय

**राव हेमू** - बूँदी का शासक
**अभयसिंह** - मेवाड़ का सेनापति
**महाराणा लाखा** - मेवाड़ का शासक
**वीर सिंह** - मेवाड़ की सेना का एक सिपाही जो बूँदी का रहने वाला था।

**चारणी तथा वीर सिंह के साथी**

## पहला दृश्य

**स्थान** : **बूँदीगढ़। बूँदी के राव हेमू अपने कमरे के मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से बात कर रहे हैं।**

**अभयसिंह** : महाराव, सिसोदिया वंश हाड़ाओं को आदर और स्नेह की दृष्टि से देखता है।

**राव हेमू** : तो फिर आप बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने की आज्ञा लेकर क्यों आए हैं ?



Scanned with CamScanner

अभयसिंह : महाराव, हम राजपूतों को छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति विदेशियों का किस प्रकार सामना कर सकती है ? इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि हम अपनी शक्ति एक केंद्र के अधीन रखें।

राव हेमू : और वह केंद्र है - चित्तौड़।

अभयसिंह : इसमें भी कोई संदेह है, महाराव! चित्तौड़ का **गत**[1] गौरव फिर लौटा है। जो राजवंश पहले मेवाड़ के अधीन थे, महाराणा लाखा चाहते हैं, आज भी उसी तरह रहें। बूँदी राज्य भी सदा से मेवाड़ के **आश्रित**[2]·····।

राव हेमू : बूँदी राज्य सदा से मेवाड़ के आश्रित, यह तुम क्या कहते हो। अभयसिंह जी! हाड़ा वंश किसी की गुलामी स्वीकार नहीं करेगा। चाहे वह विदेशी शक्ति हो, चाहे वह मेवाड़ का महाराणा हो।

अभयसिंह : महाराव, आज राजपूतों को एकसूत्र में गूँथे जाने की बड़ी आवश्यकता है और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने की ताकत रखता है, वह है महाराणा लाखा।

राव हेमू : ताकत की बात छोड़ो, अभयसिंह ! प्रत्येक राजपूत को अपनी ताकत पर **नाज़**[3] है। इतने बड़े दंभ को मेवाड़ अपने प्राणों में आश्रय न दे, इसी में उसका कल्याण है। रह गई बात एक माला में गूँथने की, सो वह माला तो बनी है। हाँ, उस माला को तोड़ने का **श्रीगणेश**[4] हो गया है।

अभयसिंह : किंतु अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।

राव हेमू : प्रेम का अनुशासन मानने को हाड़ा-वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं। मेवाड़ के महाराणा को यदि अपने ही जाति-भाइयों पर अपनी तलवार आज़माने की इच्छा हुई है, तो उससे उन्हें कोई नहीं रोक सकता है। बूँदी स्वतंत्र राज्य और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है। अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करता।

1. बीता हुआ 2. निर्भर 3. गर्व, 4. शुरुआत



Scanned with CamScanner

अभयसिंह : तो मैं जाऊँ।

राव हेमू : आपकी इच्छा।

(दोनों का दो तरफ़ प्रस्थान)

पट परिवर्तन

## दूसरा दृश्य

(स्थान-चित्तौड़ का राजमहल। महाराणा लाखा बहुत चिंतित और व्यथित अवस्था में टहल रहे हैं।)

लाखा : मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास में मैंने कलंक का टीका लगाया है। इस बार मुट्ठी भर हाड़ाओं ने हम लोगों को जिस प्रकार पराजित और विफल किया, उसमें मेवाड़ के आत्म-गौरव को कितनी ठेस पहुँची है, यह मेरा हृदय जानता है।

(अभयसिंह का प्रवेश और महाराणा को अभिवादन करना)

अभयसिंह : महाराणा जी, दरबार के सभासद आपके दर्शन पाने को उत्सुक हैं।

महाराणा : सेनापति अभयसिंह जी, आज मैं दरबार में नहीं जाऊँगा। आप जानते हैं कि जब से हमें नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू से पराजित होकर भागना पड़ा, मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है। बाप्पा रावल और वीरवर हम्मीर का रक्त जिसकी धमनियों में बह रहा हो, वह प्राणों के भय से भाग जाए, यह कितने कलंक की बात है।

अभयसिंह : किंतु ज़रा-सी बात के लिए आप इतना शोक क्यों करते हैं, महाराणा ? हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर[5] पर आक्रमण कर दिया। आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक भाग खड़े हुए। आप तो तब भी प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे, किंतु हमीं लोग आपको वहाँ से

5. सैनिक पड़ाव, किला.

Scanned with CamScanner

खींच लाए। इसमें आपका क्या अपराध है, और इसमें मेवाड़ के गौरव में कमी आने का कौन-सा कारण है ?

**महाराणा** : जिनकी खाल मोटी होती है, उनके लिए किसी भी बात में कोई भी **अपयश**[6], कलंक या अपमान का कारण नहीं होता, किंतु जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए हैं, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवित रहें, यह कैसी **उपहासजनक**[7] बात है। सुनो अभयसिंह जी, मैं अपने मस्तक के इस कलंक के टीके को धो डालना चाहता हूँ।

**अभयसिंह** : मेवाड़ के सैनिक आपकी आज्ञा पर अपने प्राणों की बलि देने को प्रस्तुत हैं।

**महाराणा** : उनके पौरुष की परीक्षा का दिन आ पहुँचा है। महारावल बाप्पा का वंशज मैं, लाखा, प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक बूँदी के दुर्ग में ससैन्य प्रवेश नहीं करूँगा, अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा।

**अभयसिंह** : महाराणा! छोटे-से बूँदी दुर्ग को विजय करने के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या आवश्यकता है ? बूँदी को उसकी **धृष्टता**[8] के लिए तो दंड दिया ही जाएगा, लेकिन हाड़ा लोग कितने वीर हैं ! युद्ध करने में वे यम से भी नहीं डरते। इसमें संदेह नहीं कि अंतिम विजय हमारी होगी, किंतु यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इसमें कितने दिन लग जाएँगे। इसलिए ऐसी भीषण प्रतिज्ञा आप न करें।

**महाराणा** : आप क्या कहते हैं, सेनापति ? क्या कभी आपने सुना है कि सूर्यवंश में पैदा होने वाले पुरुष ने अपनी प्रतिज्ञा को वापस लिया हो ? 'प्राण जाएँ पर वचन न जाए' - यह हमारे जीवन का मूल-मंत्र है। जो तीर तरकश से निकलकर, कमान पर चढ़कर छूट गया, उसे बीच में नहीं लौटाया जा सकता। मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होगी, यह मैं जानता हूँ। और इस बात की हाल के युद्ध में पुष्टि भी हो चुकी है कि हाड़ा जाति वीरता

6. बदनामी, 7. हँसी की 8. दुस्साहस

Scanned with CamScanner

में हम लोगों से किसी प्रकार हीन नहीं है, फिर भी महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा वास्तव में प्रतिज्ञा है – वह पूर्ण होनी ही चाहिए।

**( नेपथ्य[9] में गान )**

ये सागर से रत्न निकाले। युग-युग से हैं गए सँभाले।
इनसे दुनिया में उजियाला। तोड़ मोतियों की मत माला।
ये छाती में छेद कराकर, एक हुए हैं हृदय मिलाकर।
इनमें व्यर्थ भेद क्यों डाला ? तोड़ मोतियों की मत माला।

**( गाते-गाते चारणी का प्रवेश )**

**महाराणा** : तुम कुछ गा रही थी, चारणी ? तुम संपूर्ण राजस्थान को एकता की **शृंखला**[10] बाँधकर देश की स्वाधीनता के लिए कुछ करने का आदेश दे रही थी। किंतु मैं तो उस शृंखला को तोड़ने जा रहा हूँ। दो जातियों में जानी दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूँ।

**चारणी** : यह आप क्या कहते हैं महाराणा ? आपके विवेक पर सबको विश्वास है। मैं आपसे निवेदन करने आई हूँ कि यद्यपि समय के फेर से आप हाड़ा शक्ति और साधनों में मेवाड़ के उन्नत राज्य से छोटे हैं, फिर भी वे वीर हैं। मेवाड़ को उसकी विपत्ति के दिनों में सहायता देते रहे हैं। यदि उनसे कोई धृष्टता बन पड़ी हो, तो महाराणा उसे भूल जाएँ और राजपूत शक्तियों में स्नेह का संबंध बना रहने दें।

**महाराणा** : चारणी, तुम बहुत देर आई !

**अभयसिंह** : चारणी, महाराणा ने प्रतिज्ञा की है कि जब तक वे बूँदी के गढ़ को जीत न लें, अन्न-जल ग्रहण न करेंगे।

**चारणी** : दुर्भाग्य! (कुछ सोचकर) महाराणा, मैं ऐसा नहीं होने दूँगी। देश का कोई शुभचिंतक इस **विद्वेष**[11] की आग को फैलने देना पसंद नहीं कर सकता।

**अभयसिंह** : किंतु महाराणा की प्रतिज्ञा तो पूरी होनी ही चाहिए।

---

9. रंगमंच के पर्दे के पीछे की जगह 10. कड़ी 11. ईर्ष्या

Scanned with CamScanner

चारणी : उसका एक ही उपाय है। यह यह कि यहीं पर बूँदी का एक नकली दुर्ग बनाया जाए। महाराणा उसका **विध्वंस**[12] करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें। महाराणा, क्या आपको मेरा प्रस्ताव स्वीकार है ?

महाराणा : अच्छा, अभी तो मैं नकली दुर्ग बनाकर उसका विध्वंस करके अपने व्रत का पालन करूँगा, किंतु हाड़ाओं को उनकी उद्दंडता का दंड दिए बिना मेरे मन को संतोष न होगा। सेनापति, नकली दुर्ग बनवाने का प्रबंध करें।

**( सबका प्रस्थान )**

पट परिवर्तन

## तीसरा दृश्य

**( चित्तौड़ के निकट एक जंगली प्रदेश, नकली दुर्ग का मुख्य दरवाज़ा महाराणा लाखा और सेनापति अभयसिंह का प्रवेश )**

अभयसिंह : आपने दुर्ग का निरीक्षण कर लिया? ठीक बन गया है न ?

महाराणा : क्यों न बनता! निस्संदेह यह ठीक बूँदी-दुर्ग की हू-ब-हू नकल है। अब इस पर चढ़ाई करने का खेल खेला जाए। इस मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में मिलाने से मेरी आत्मा को संतोष नहीं होगा, लेकिन अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा मैंने कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा। उसके बाद फिर ठंडे दिमाग से सोचना होगा कि बूँदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए किस तरह **बाध्य**[13] किया जाए ?

अभयसिंह : निश्चय ही महाराज! शीघ्र ही बूँदी के पठारों पर सिसोदिया का सिंहनाद होगा। अच्छा, अब हम लोग आज के रण की तैयारी करें।

महाराणा : किंतु यह रण होगा किससे? इस दुर्ग में कोई तो हमारा पथ-**प्रतिरोध**[14] करने वाला होना चाहिए।

---

12. नाश 13. मजबूर, 14. विरोध रुकावट, बाधा,



Scanned with CamScanner

अभयसिंह : हाँ, खेल में भी तो कुछ वास्तविकता आनी चाहिए। मैंने सोचा है दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ सैनिक रख दिए जाएँगे, जो बंदूकों से हम लोगों पर छूँछे[15] वार करेंगे। कुछ घंटे ऐसा ही खेल होगा और फिर यह मिट्टी का दुर्ग मिट्टी में मिला दिया जाएगा। अच्छा, अब हम चलें।

**( दोनों का प्रस्थान। दूसरी ओर से वीरसिंह का कुछ साथियों के साथ प्रवेश )**

वीरसिंह : मेरे बहादुर साथियो ! तुम देख रहे हो कि हमारे सामने यह कौन-सी इमारत बनाई गई है ?

पहला साथी : हाँ सरदार, यह हमारी जन्मभूमि बूँदी का दुर्ग है।

वीरसिंह : और तुम जानते हो कि महाराणा इस गढ़ को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं, किंतु क्या हम लोग अपनी मातृभूमि का अपमान होने देंगे ? यह हमारे वंश के मान का मंदिर है। क्या इसे मिट्टी में मिलने देंगे ?

दूसरा साथी : किंतु यह तो नकली बूँदी है।

वीरसिंह : धिक्कार है तुम्हें ! नकली बूँदी भी प्राणों से अधिक प्रिय है। जिस जगह एक भी हाड़ा है, वहाँ बूँदी का अपमान आसानी से नहीं किया जा सकता। आज महाराणा आश्चर्य के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेल ही नहीं रहेगा, यहाँ की चप्पा-चप्पा भूमि सिसोदियों और हाड़ाओं के खून से लाल हो जाएगी।

तीसरा साथी : लेकिन सरदार, हम लोग महाराणा के नौकर हैं। क्या महाराणा के विरुद्ध तलवार उठाना हमारे लिए उचित है ? हमारा शरीर महाराणा के नमक से बना है। हमें उनकी इच्छा में व्याघात[16] नहीं पहुँचाना चाहिए।

वीरसिंह : और जिस जन्मभूमि की धूल में हम खेलकर बड़े हुए हैं, उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है ? जब कभी मेवाड़ की स्वतंत्रता पर आक्रमण हुआ है, हमारी तलवार ने

15. खाली 16. रुकावट

Scanned with CamScanner

उनके नमक का बदला दिया है, लेकिन जब मेवाड़ और बूँदी के मान का प्रश्न आएगा, हम मेवाड़ की दी हुई तलवारें महाराणा के चरणों में चुपचाप रखकर विदा लेंगे और बूँदी की ओर से प्राणों की बलि देंगे। आज ऐसा ही अवसर आ पड़ा है।

**पहला साथी** : निश्चय ही जहाँ पर बूँदी है, वहाँ पर हाड़ा है, और जहाँ पर हाड़ा है, वहाँ पर बूँदी है। कोई नकली बूँदी का भी अपमान नहीं कर सकता। जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

**वीरसिंह** : मेरे वीरो ! तुम अग्नि कुल के अंगारे हो। अपने वंश की आभा को क्षीण न होने देना। प्रतिज्ञा करो कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ की राज्य-पताका को स्थापित न होने देंगें।

**सब लोग** : हम प्रतिज्ञा करते हैं कि प्राणों के रहते इस दुर्ग पर मेवाड़ का ध्वज न फहराने देंगे।

**वीरसिंह** : मुझे आप लोगों पर अभिमान है और बूँदी आप जैसे पुत्रों को पाकर फूली नहीं समाती। जिस बूँदी में ऐसे मान के धनी पैदा होते हैं, उस पर संसार आशीर्वाद के साथ फूल बरसा रहा है। चलो, हम दुर्ग रक्षा की तैयारी करें।

**पट परिवर्तन**

## चौथा दृश्य

**( स्थान : बूँदी के नकली दुर्ग का बंद द्वार। महाराणा लाखा और अभयसिंह का प्रवेश )**

**महाराणा** : सूर्य डूबने को आया। यह कैसी लज्जा की बात है कि हमारी सेना बूँदी के नकली दुर्ग पर अपना झंडा स्थापित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी। वीरसिंह और उसके मुट्ठी भर साथी अभी तक वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं।

**अभयसिंह** : हाँ महाराणा, हम तो समझते थे कि घड़ी-दो-घड़ी में खेल खत्म हो जाएगा, लेकिन हमें छूँछे वारों का मुकाबला करने के

Scanned with CamScanner

बजाय हाड़ाओं के अचूक निशानों का सामना करना पड़ा। यद्यपि ये लोग गिनती में थोड़े हैं, किंतु इन्होंने दीवारों की आड़ में उपयुक्त स्थान बनाकर हम पर गोली और तीर बरसाना प्रारंभ कर दिया। हमारी सेना इस आकस्मिक प्रहारों से भौंचक्की हो गई। अब दुर्ग के भीतर के हाड़ाओं की युद्ध-सामग्री समाप्त हो गई है। आपकी प्रतिज्ञा पूरी होने में कुछ ही क्षणों का विलंब है।

**महाराणा** : यह भी अच्छा ही हुआ कि हमारे इस खेल में भी कुछ वास्तविकता आ गई। यदि हमें बिना कुछ पराक्रम दिखाए ही दुर्ग पर अपना झंडा फहराने का अवसर मिल जाता, तो मुझे ज़रा भी संतोष न होता, और सच पूछो तो मुझे वीरसिंह की वीरता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता था कि ऐसे वीर के प्राणों की किसी प्रकार रक्षा हो सकती।

**अभयसिंह** : मैंने भी जब दुर्ग से अग्नि वर्षा होती देखी तो मुझे कुछ आश्चर्य हुआ था और कुछ क्षणों के लिए सफ़ेद झंडा फहराकर मैंने युद्ध रोक दिया था। उसके पश्चात् मैं स्वयं दुर्ग में गया और वीरसिंह की उसके साहस के लिए प्रशंसा की। साथ ही उससे अनुरोध किया कि तुम इस व्यर्थ प्रयास में अपने प्राण न खोओ। तुम महाराणा के नौकर हो, तुम्हें उनके विरुद्ध हथियार न उठाना चाहिए, किंतु उसने उत्तर दिया कि महाराणा ने हाड़ाओं को चुनौती दी है। हम उस चुनौती का उत्तर देने को मजबूर हैं। महाराणा यदि हमारे प्राण लेना चाहते हैं, तो खुशी से ले लें, लेकिन हम इतने कायर और **निष्प्राण**[17] नहीं है कि अपनी आँखों से बूँदी का अपमान होते देखें। मेवाड़ में जब तक एक भी हाड़ा है, नकली बूँदी पर भी बूँदी की ही पताका फहराएगी।

**महाराणा** : निश्चय ही इन वीरों की जन्मभूमि के प्रति आदरभाव सराहनीय है। यह मैं जानता हूँ कि इन लोगों के प्राणों की रक्षा करने का

17. प्राणों से रहित

कोई उपाय नहीं है। इतने बहुमूल्य प्राण लेकर भी मुझे प्रतिज्ञा पूरी करनी पड़ेगी। वह देखो दुर्ग की उस दरार में खड़ा हुआ वीरसिंह कितनी फुर्ती से बाण-वर्षा कर रहा है। अकेला ही हमारे सैकड़ों सैनिकों की टोली को आगे बढ़ने से रोके हुए है। धन्य हैं ऐसे वीर ! धन्य हैं वह माँ जिसने ऐसे वीर पुत्र को जन्म दिया। धन्य है वह भूमि! जहाँ पर ऐसे सिंह पैदा होते हैं।

**( ज़ोर का धमाका और प्रकाश होता है। )**

**महाराणा** : अरे देखो अभयसिंह, गोले के वार से वीरसिंह के प्राण-पखेरू उड़ गए। बूँदी के मतवाले सिपाही सदा के लिए सो गए। अब हम **विजयश्री**[18] प्राप्त कर सके। जाओ दुर्ग पर मेवाड़ का पताका फहराओ और वीरसिंह के शव को आदर के साथ यहाँ ले आओ।

**( अभयसिंह का प्रस्थान )**

**महाराणा** : आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है। व्यर्थ के **दंभ**[19] ने आज कितने ही निर्दोष प्राणों की बलि ले ली।

**( चारणी का प्रवेश )**

**चारणी** : महाराणा, अब तो आपकी आत्मा को शांति मिल गई होगी। अब तो आपने अपने सिर का कलंक का टीका धो लिया। यह देखिए बूँदी के दुर्ग पर मेवाड़ के सेनापति विजय-पताका फहरा रहे हैं। वह सुनिए, मेवाड़ की सेना में विजय **दुंदुभि**[20] बज रही है।

**महाराणा** : चारणी, क्यों पश्चाताप से विकल प्राणों को तुम और दुखी करती हो ? न जाने किस बुरी **सायत**[21] में मैंने बूँदी को अपने अधीन करने का निश्चय किया था। वीरसिंह की वीरता ने मेरे हृदय के द्वार खोल दिए हैं, मेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया है। मैं देखता हूँ, ऐसी वीर जाति को अधीन करने की अभिलाषा करना पागलपन है।

18. जीत 19. अहंकार 20. डंका, नगाड़ा, 21. मुहूर्त



Scanned with CamScanner

चारणी : तो क्या महाराणा, अब भी मेवाड़ और बूँदी के हृदय मिलाने का कोई रास्ता नहीं निकल सकता ?

**( वीरसिंह के शव के साथ अभयसिंह का प्रवेश )**

महाराणा : (शव के पास बैठते हुए) चारणी, इस शहीद के चरणों के पास बैठकर मैं अपने अपराध के लिए क्षमा माँगता हूँ, किंतु क्या बूँदी के राव तथा हाड़ा-वंश का प्रत्येक राजपूत आज की इस दुर्घटना को भूल सकेगा?

**( राव हेमू का प्रवेश )**

राव हेमू : क्यों नहीं महाराणा ! हम युग-युग से एक हैं और एक रहेंगे। आपको यह जानने की आवश्यकता थी कि राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा! सब देश जाति और वंश की मान-रक्षा के लिए प्राण देने वाले सैनिक हैं। हमारी तलवार अपने ही स्वजनों पर न उठनी चाहिए। बूँदी के हाड़ा सुख और दुख में चित्तौड़ के सिसोदियों के साथ रहे हैं और रहेंगे। हम सब राजपूत अग्नि के पुत्र हैं, हम सबके हृदय में एक ज्वाला जल रही है। हम कैसे एक दूसरे से पृथक् हो सकते हैं। वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है।

महाराणा : निश्चय ही महाराज ! हम संपूर्ण राजपूत जाति की ओर से इस अमर आत्मा के आगे अपना मस्तक झुकाएँ। ( सब बैठकर **वीरसिंह के शव के आगे झुकते हैं।** )

**( पटाक्षेप )**

Scanned with CamScanner